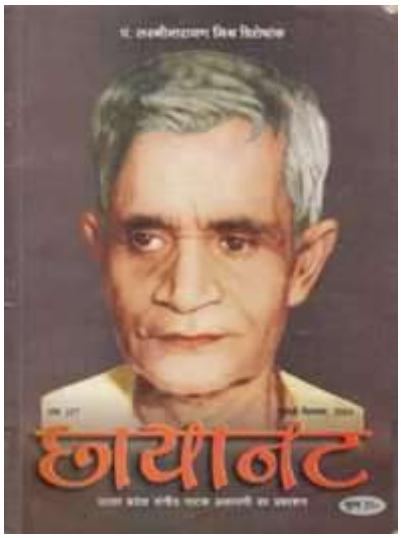

पं. लक्ष्मीनारायण मिश्र

आधुनिक हिंदी नाटक के समस्या नाट्य शैली के जन्मदाता पं. लक्ष्मीनारायण मिश्र का जन्म 18 दिसम्बर, 1903 को उत्तर प्रदेश, आजमगढ़ जिले के बस्ती नामक स्थान पर हुआ था। काशी विश्वविद्यालय से बी.ए. की शिक्षा पूर्ण करके एल.एल.बी. करने के लिए उन्होंने प्रयाग विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया। लेकिन उन्हें पढ़ाई बीच में ही छोड़नी पड़ी।

डॉ. रामकुमार वर्मा, लक्ष्मीनारायण लाल, पं. उदयशंकर भट्ट और उपेन्द्रनाथ अश्क आधुनिक युग के प्रमुख एकांकीकार थे, उनसे अलग प्रकार के थे पं. लक्ष्मीनारायण मिश्र। इस कारण हिंदी के एकांकीकारों में उनका अपना एक विशिष्ट स्थान है। उन्होंने काशी और प्रयाग में जयशंकर प्रसाद, रामचंद्र शुक्ल, निराला जैसे साहित्यकारों से प्रेरणा प्राप्त की। उन पर पाश्चात्य नाटककार का प्रभाव था। उन्होंने 25 नाटकों और 100 एकांकियों का सृजन किया।

उनकी रचनाएं इस प्रकार हैं-

महाकाव्य - कालजयी

सामाजिक नाटक - सन्यासी, मुक्ति का रहस्य, राक्षस का मंदिर, राजयोग, सिंदूर की होली, आधी रात

सांस्कृतिक एवं - गरूड़ध्वज, वत्सराज, दशाश्वमेध, वितस्ता की लहरें, वैशाली में वसंत,

ऐतिहासिक नाटक - जगद्गुरू, धरती का हृदय, सरयू की धार

पौराणिक नाटक - नारद की वीणा, चक्रव्यूह, चित्रकूट, अपराजित, अश्वमेध, प्रतिज्ञा का भोग

व्यक्तिपरक नाटक - कवि भारतेन्दु, मृत्युंजय

एकांकी-संग्रह - अशोक वन, प्रलय के पंख पर, भगवान मनु तथा अन्य एकांकी, कावेरी में कमल, स्वर्ग में विप्लव, नारी का रंग, बाल एकांकी

कविता संग्रह - अन्तर्जगत

उनका निधन 19 अगस्त, 1987 को वाराणसी में हुआ।